अध्याय
09

भारतीय राजनीति: नए बदलाव

परिचय

- पिछले दो दशकों में भारतीय राजनीति में हुए महत्वपूर्ण बदलाव दिखलाई पड़ते हैं। एकल राजनीतिक प्रभुत्व वाली प्रणाली समाप्त होती है, उसके स्थान पर एक नए गठबंधन की राजनीति की शुरुआत होती है। तत्कालीन राजनीतिक परिदृश्य में हुए कुछ घटनाओं ने इसे प्रभावित किया जैसे मंडल आयोग का प्रभाव, बाबरी मस्जिद विध्वंस का प्रभाव आदि ने राजनीति को एक नई दिशा प्रदान की।
- एक आम सहमति की राजनीति भी देखने को मिलती है।

1990 का दशक

- इस दौर की एक महत्वपूर्ण घटना 1989 के चुनावों में कांग्रेस की हार है ।
- 1991 में पुनः मध्यावधि चुनाव हुए और कांग्रेस अपनी स्थिति को मजबूत करते हुए सत्ता में आई।
- यहां कांग्रेस प्रणाली की समाप्ति हो जाती है, लेकिन एक महत्वपूर्ण पार्टी के रूप में कांग्रेस की उपस्थिति बनी रहती है।
- इस दशक का दूसरा महत्वपूर्ण बदलाव राष्ट्रीय राजनीति में मंडल मुद्दे का उदय:-
  - 1990 ईस्वी में राष्ट्रीय मोर्चा की नई सरकार ने मंडल आयोग की सिफारिशों को लागू किया।
  - इस सिफारिशों के अंतर्गत केंद्र सरकार की नौकरियों में अन्य पिछड़ा वर्ग को आरक्षण दिया जाएगा।
  - अब आरक्षण समर्थक और आरक्षण विरोधियों के बीच विवाद चला इसे मंडल विवाद मुद्दा कहा जाता है।
  - 1990 ईस्वी के बाद भारत की राजनीति में मंडल मुद्दा ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।
- तीसरा महत्वपूर्ण बदलाव नई आर्थिक नीति की दौर की शुरुआत, जिसे इस दौर की सभी सरकारों ने अपनाई।
  - इसकी शुरुआत राजीव गांधी की सरकार के समय हुई।
  - नई आर्थिक नीति का तत्कालीन संगठनों एवं विभिन्न आंदोलनों के द्वारा विरोध किया गया।

© NCERT not to be republished

- चौथी घटना अयोध्या स्थित विवादित ढांचे के विध्वंस के रूप में हुई।
  - यह घटना दिसंबर 1992 ईस्वी की है, इस घटना ने राजनीति में कई महत्वपूर्ण परिवर्तनों का वाहक बना।
  - भारतीय राष्ट्रवाद और धर्मनिरपेक्षता पर बहस तेज हो गई।
  - इसका संबंध भाजपा का उदय और हिंदुत्व की राजनीति से है।
- पांचवीं घटना 1991 ईस्वी में राजीव गांधी की हत्या।
  - चुनाव प्रचार के दौरान राजीव गांधी तमिलनाडु दौरे पर थे, तभी लिट्टे से जुड़े श्रीलंकाई तमिलों ने उनकी हत्या कर दी।
  - राजीव की मृत्यु के बाद कांग्रेस पार्टी ने नरसिम्हा राव को प्रधानमंत्री चुना।

गठबंधन का युग

- 1989 ईस्वी के चुनाव में कांग्रेस पार्टी की हार हुई, लेकिन अन्य दलों को भी स्पष्ट बहुमत नहीं मिला।
- लेकिन कांग्रेस अभी लोकसभा में सबसे बड़े दल के रूप में थी, उसने विपक्ष में बैठने का फैसला किया।
- अब जनता दल और कुछ अन्य क्षेत्रीय दलों ने मिलकर राष्ट्रीय मोर्चा का निर्माण किया जिसे वामदल और भाजपा ने भी समर्थन दिया था (बाहर से) । उद्देश्य कांग्रेस को सत्ता से बाहर रखना।

कांग्रेस का पतन

- कांग्रेस के पतन के साथ ही भारत में एक दलीय व्यवस्था समाप्त हो गई और उसके स्थान पर बहुत दलीय शासन प्रणाली के युग की शुरुआत हुई।
- 1989 से लेकर 2014 तक किसी एक दल को लोकसभा में पूर्ण बहुमत नहीं मिला।
- इसके बाद 2014 एवं 2019 के लोकसभा चुनाव में भाजपा को पूर्ण बहुमत प्राप्त हुआ।

गठबंधन

- गठबंधन शब्द लैटिन भाषा के 'को-अलीसन 'शब्द से लिया गया है जिसका अर्थ साथ चलना या बढ़ना होता है
- इसका अर्थ एक निकाय या गठबंधन में बंधना या एकजुट होना होता है।
- राजनीतिक अर्थ में इसका इस्तेमाल राजनीतिक सत्ता पर नियंत्रण हासिल करने के लिए विभिन्न राजनीतिक दलों के बीच बनी एक अस्थाई गठबंधन से है।

गठबंधन सरकार

- प्रमुख लाभ
  - लोकतंत्र की मजबूती।
  - सहमति आधारित राजनीति।
  - सामाजिक दूरी को कम करने में महत्वपूर्ण भूमिका।
  - आम जनता के मुद्दों की ओर ध्यान आकर्षण।

© JCERT not to be republished

- केंद्रीय सत्ता में क्षेत्रीय दलों की बढ़ती भूमिका।

- प्रमुख दोष
  - राष्ट्रीयता की भावना की कमी तथा क्षेत्रीयता की वृद्धि होती है।
  - भ्रष्टाचार की वृद्धि होती है।
  - नीतियों को बदलने पर दबाव की लगातार बाध्यता होती है।
  - अलग-अलग दलों के सैद्धांतिक आदर्शों में मतभेद।
  - प्रधानमंत्री के विशेष अधिकारों का हनन।
  - लोकतांत्रिक मूल्यों का ह्रास।
  - मतदाताओं की लोकतांत्रिक इच्छाओं व उद्देश्यों का हनन होने की आशंका रहती है।

गठबंधन की राजनीति:-

- 90 के दशक में क्षेत्रीय मुद्दों, दलितों एवं पिछड़े वर्गों के हिमायती के तौर पर अनेक क्षेत्रीय दलों का उभार हुआ और इसने राजनीति में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।
- 1996 में बनी संयुक्त मोर्चा की सरकार में इन दिनों की महत्वपूर्ण भूमिका थी।
- 1996 की संयुक्त मोर्चा 1989 की राष्ट्रीय मोर्चा के समान ही था, लेकिन इसमें कांग्रेस शामिल थी। उद्देश्य भाजपा को सत्ता से बाहर रखना है।
- अब भाजपा ने विभिन्न क्षेत्रीय दलों के साथ एक गठबंधन बनाया जिसे राष्ट्रीय जनतांत्रिक गठबंधन अर्थात् राजग (NDA) कहा जाता है।
- भाजपा इस गठबंधन के तहत 1998 ईस्वी के मई से जून 1999 ईस्वी तक सत्ता में रही। पुनः अक्टूबर 1999 में सत्ता ग्रहण कर 2004 ईस्वी तक अपना कार्यकाल पूरा किया। इस गठबंधन के अगुआ श्री अटल बिहारी वाजपेई थे, इस दौर में वे प्रधानमंत्री भी रहे।
- 1989 ईस्वी में जो गठबंधन का दौर शुरू हुआ, वह वर्तमान समय तक जारी है, हालांकि अब इस की प्रवृत्ति बदल रही है।

1977 ईस्वी के बाद भारत की राजनीति में जो बदलाव के चिन्ह् दिखते हैं, उसमें कई क्षेत्रीय दलों का उभार हुआ, जिसने कहीं ना कहीं कांग्रेस को ही कमजोर किया, लेकिन कोई भी दल कांग्रेस का विकल्प नहीं बन सका।

अन्य पिछड़ा वर्ग का राजनीतिक उदय:-

- इस काल में ही एक नए वर्ग अन्य पिछड़ा वर्ग (OBC) अथवा 'अदर बैकवर्ड क्लासेस'का उदय हुआ। उनका
- यह अनुसूचित जाति एवं जनजाति से एक अलग कोटी है, जिसमें शैक्षणिक और सामाजिक रूप से पिछड़े समुदायों की गणना की जाती है, जिसे पिछड़ा वर्ग कहा जाता है।

© JCERT not to be republished

मंडल आयोग:-

- बिहार के तत्कालीन मुख्यमंत्री कर्पूरी ठाकुर ने ओबीसी को आरक्षण देने के लिए एक नई नीति लागू की। इसी परिपेक्ष में केंद्र सरकार ने पिछड़े वर्गों की शैक्षणिक एवं आर्थिक स्थिति सुधारने हेतु एक आयोग का गठन किया जिसके अध्यक्ष विंदेश्वरी प्रसाद मंडल (बीपी मंडल) को बनाया गया, जिसके नाम पर इसे मंडल आयोग कहा जाता है।
- आजादी के बाद यह दूसरा पिछड़ा वर्ग आयोग बना था।
- सिफारिशें।
- पिछड़ा वर्ग को पिछड़ी जाति के रूप में स्वीकार किया जाए, क्योंकि अनुसूचित जातियों से इत्तर अनेक जातियां हैं, इन्हें वर्ण व्यवस्था में नीचा समझा जाता है।
- पिछड़े वर्गों के लिए शिक्षण संस्थानों एवं नौकरियों में 27% आरक्षण की व्यवस्था की जाए।
- भूमि सुधार कानून।
- राष्ट्रीय मोर्चा की सरकार ने मंडल आयोग की सिफारिशों को लागू करने का फैसला लिया ।
- भारतीय समाज में अन्य पिछड़ा वर्ग एक बहुत बड़े हिस्से के रूप में मौजूद है, अब इन्हें राजनीतिक रूप से संगठित करने हेतु एवं उन्हें अपनी पहचान प्रदान करने हेतु अनेक राजनीतिक दल उभरे जिन्होंने शिक्षा रोजगार आदि में इनके प्रतिनिधित्व के मुद्दे को लेकर भारतीय राजनीति में महत्वपूर्ण भूमिका निभाने लगे।

राजनीतिक परिणाम:

दलित राजनीति:

- 1980 के दशक में दलित राजनीति में भी उभार आया।
- 1978 ईस्वी में बामसेफ (बैकवर्ड एंड माइनॉरिटी कम्युनिटी एंप्लाइज फेडरेशन) का गठन हुआ।
- इस संगठन ने बहुजन यानी अनुसूचित जाति, अनुसूचित जनजाति, अन्य पिछड़ा वर्ग एवं अल्पसंख्यकों की राजनीतिक सत्ता की तरफदारी की।
- इसी का परिवर्तित विकास 'दलित समाज संघर्ष समिति' है।
- इसी के बाद कांशीराम के नेतृत्व में बहुजन समाज पार्टी (बसपा) का उदय।
- बसपा प्रारंभ में छोटी पार्टी थी, लेकिन 1989 से 1991 के बीच उत्तर प्रदेश में उसे सफलता मिली, प्रारंभ में इसे कांशीराम जैसे सशक्त एवं जुझारू नेता का नेतृत्व मिला।
- वर्तमान में भारत के कई हिस्सों में दलित राजनीति और पिछड़ा वर्ग राजनीति एक दूसरे की प्रतिस्पर्धी हो गई है।

सांप्रदायिकता, धर्मनिरपेक्षता और लोकतंत्र:-

- संप्रदायिकता
- धर्मनिरपेक्षता
- लोकतंत्र

© JCERT not to be republished

भारतीय जनता पार्टी:

- गठन 1980 ईसवी
- जनता पार्टी के पतन के बाद भूतपूर्व जनसंघ समर्थकों ने इसका गठन किया।
- गांधीवादी समाजवाद की विचारधारा को अपनाया।
- 1980 और 1984 के चुनावों में इसे कोई खास सफलता नहीं मिली।
- 1986 ईस्वी के बाद इसने हिंदू राष्ट्र के विचारधारा पर जोर देना शुरू किया, हिंदुओं को लामबंद करने की नीति का अनुसरण किया।
- हिंदुत्व के समर्थकों का तर्क है कि मजबूत राष्ट्र सिर्फ एकीकृत राष्ट्रीय संस्कृति की बुनियाद पर ही बनाया जा सकता है।
- भारत के संदर्भ में राष्ट्रीयता की बुनियाद केवल हिंदू संस्कृति ही हो सकती है।
- 1985 ईस्वी का शाहबानो मामला को भी भाजपा ने एक मुद्दा बनाया था और कांग्रेस सरकार की आलोचना की।

अयोध्या विवाद:

- कुछ हिंदुओं का मानना है कि अयोध्या भगवान राम की जन्मभूमि है, यहां 16वीं सदी में मीर बाकी जो बाबर का सिपहसालार था, राम मंदिर को तोड़कर बाबरी मस्जिद का निर्माण कराया।
- अब हिंदू और मुसलमानों के बीच यह विवाद का मुद्दा बन गया। मामला अदालत तक पहुंची, जो कई दशकों तक जारी रही 1940 के दशक के आखिरी साल में मस्जिद हाते में ताला लगा दिया गया।
- 1986 ईस्वी में फैजाबाद जिला न्यायालय द्वारा एक फैसला सुनाया गया,जिसके तहत मस्जिद के हाथे का ताला खोल दिया गया।
- ताला खुलते ही दोनों पक्ष अपने-अपने समुदाय को लामबंद करने लगे।
- भाजपा ने इसे बड़ा चुनावी और राजनीतिक मुद्दा बनाया। राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ और विश्व हिंदू परिषद के साथ भाजपा लगातार प्रतीकात्मक लामबंदी कार्यक्रम चलाया।
- जनसमर्थन जुटाने हेतु इसने सोमनाथ से अयोध्या की रथ यात्रा निकाली।

विध्वंस और उसके बाद:

- 6 दिसंबर 1992 को देश के विभिन्न भागों से कारसेवक अयोध्या पहुंचे और बाबरी मस्जिद के ढांचे को गिरा दिया।
- इसके बाद हिंदू और मुसलमानों के बीच झड़प शुरू हो गई संप्रदायिक माहौल बिगड़ने लगा। उदाहरण स्वरूप 1993 में मुंबई में हिंसा भड़की।
- राजनीतिक परिवर्तन
- उत्तर प्रदेश में सत्तासीन भाजपा सरकार को केंद्र सरकार ने बर्खास्त कर दिया।
- भाजपा ने आधिकारिक तौर पर अयोध्या की घटना पर अफसोस जताया।
- धर्मनिरपेक्षता पर बहस प्रारंभ हो गई स्थिति कुछ ऐसी ही उत्पन्न हुई है जैसी विभाजन के समय हुई थी।
- भारत में लोकतांत्रिक राजनीति इस वायदे पर आधारित है कि सभी धार्मिक समुदाय किसी भी दल में शामिल हो सकते हैं,

© JCERT not to be republished

लेकिन कोई भी राजनीतिक दल धार्मिक समुदाय पर आधारित नहीं होगी।

- इसके बाद भी भारत को कई चुनौतियों का सामना करना पड़ा।
- 1984 के सिख विरोधी दंगा।
- 2002 का गुजरात दंगा।

एक नई सहमति का उदय:

- नई आर्थिक नीति पर सहमति।
- पिछड़ी जातियों के राजनीतिक और सामाजिक दावे की स्वीकृति।
- देश के शासन में प्रांतीय दलों की भूमिका की स्वीकृति।
- विचारधारा की जगह कार्य सिद्धि पर जोर और विचारधारा गत सहमति के बगैर राजनीतिक गठजोड़ ।
- यह सभी महत्वपूर्ण बदलाव हैं और आगामी राजनीति इन्हीं बदलावों के दायरे में आकार लेगी।

स्मरणीय तथ्य:

- 1967 के आम चुनाव के बाद भारत की राजनीति में क्षेत्रीय दलों का उभार दिखने लगता है।
- 1984 में पंजाब में सिख विरोधी दंगे हुए थे।
- 6 दिसंबर 1992 को अयोध्या स्थित बाबरी मस्जिद ढांचे को ढहा गया।
- 1996 ईस्वी के चुनाव के बाद क्षेत्रीय दलों को केंद्रीय मंत्रिमंडल में भी जगह मिलने लगी।
- ओबीसी की आरक्षण हेतु बी पी मंडल आयोग का गठन किया गया था।
- 90 के दशक में भारत में नई आर्थिक नीति की शुरुआत हुई।
- 1991 ईस्वी में चुनाव प्रचार के दौरान पूर्व प्रधानमंत्री राजीव गांधी की हत्या हुई थी।

प्रश्नावली
बहुविकल्पी प्रश्न

1. क्षेत्रवाद का एक परिणाम है ?

   a. अपने क्षेत्र से लगाव

   b. अलगाववाद

   c. राष्ट्रीय एकता

   d. राष्ट्रीय हित

2. क्षेत्रीय दलों के उदय का सबसे बड़ा कारण क्या है?

   a. कांग्रेस के नेतृत्व का पतन

   b. क्षेत्रिय और असंतुलन

   c. भारत की संघीय व्यवस्था

   d. बहुदलीय व्यवस्था

3. 1977 में जनता पार्टी के शासन में प्रधानमंत्री कौन बना?

   a. चंद्रशेखर

   b. विश्वनाथ प्रताप सिंह

   c. मोरारजी देसाई

   d. इंद्र कुमार गुजराल

© JCERT not to be republished

4. आपातकाल के दौरान कौन सा संविधान संशोधन पारित किया गया था?

   a. 46 वां संशोधन

   b. 44 वां संशोधन

   c. 45 वां संशोधन

   d. 42 वां संशोधन

5. संपूर्ण क्रांति का नारा किसने दिया?

   a. इंदिरा गांधी

   b. लोकनायक जयप्रकाश नारायण

   c. शिबू सोरेन

   d. मोरारजी देसाई

लघु उत्तरीय प्रश्न

1. गठबंधन की राजनीति से क्या समझते हैं?

2. मंडल आयोग पर संक्षिप्त टिप्पणी लिखें।

3. भारत के किन्ही चार प्रधानमंत्रियों के नाम का उल्लेख करें तथा उनके गठबंधन के नाम लिखें।

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न

1. 1989 के बाद की अवधि में भारतीय राजनीति के क्या मुख्य मुद्दे रहे हैं? इन मुद्दों से राजनीतिक दलों के आपसी जुड़ाव के क्या रूप सामने आए हैं?

2. 1990 के दशक में भारतीय जनता पार्टी के उदय और विकास पर टिप्पणी लिखिए।

© JCERT not to be republished